International Seminar [Hybrid Mode] on "Integrating Indian Knowledge System with Modern Education: Explore frameworks for incorporating IKS into contemporary curricula, aligning with NEP 2020" 19-20 Dec'2024
With e-ISSN 2394-8426 & International Impact Factor 8.249 ISSUE-IV(II), VOLUME-XI
DOI link - https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2412IV02V12P0017

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन (छ.ग. के बिलासपुर जिले के संदर्भ में)

डॉ. रीता सिंह
प्राचार्य, सांदीपनी एकेडमी
पेण्ड्री (मस्तूरी), बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में स्थित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इसके लिये ग्रामीण क्षेत्र के 60 और शहरी क्षेत्र के 60 छात्र–छात्राओं को लिया गया। यह परिकल्पना की गई कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नही होता है। विष्कर्ष यह प्राप्त हुआ कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्रओं के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया ।

प्रस्तावना

आज समाज में चारों ओर नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों में गिरावट देखने को मिल रही है, आज की भीड़ भरी दुनिया में, भौतिक की आंधी में, साम्प्रदायिक संकीर्णता की बाढ़ में, प्रतिस्पर्धा ही होड में, स्वार्थ परता के तूफान में हमारे सभी नैतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक तथा धार्मिक मूल्य बहते चले जा रहे हैं। इस हास के फलस्वरूप शिक्षा के क्षेत्र में भी निरंतर गिरावट देखने को मिल रही है। आज समाज में सामान्य व्यक्ति की यह धारणा है कि मेहनत मजदूरी एवं ईमानदारी से जीने वाले व्यक्ति पिस रहे हैं और झूठ एवं बेइमानी का रोजगार अग्रसर हो रहा है। ईमानदार व्यक्ति को मूर्ख माना जाता है। इस धारणा ने शिक्षा के क्षेत्र में अनुशासनहीनता, सत्य के प्रति अनास्था, स्वकर्त्तव्य के प्रति उदासीनता और अनुत्तरदायित्व आदि को जन्म दिया है।

अतः आज की विसंगतियों में समाज तथा उसके प्रत्येक सदस्य का यह दायित्व हो जाता है कि वह मूल्यों के विकास पर बल दें, क्योंकि मूल्यविहीन राजनीति एवं शिक्षा विनाश की ओर ले जायेंगें, न कि विकास की ओर। इसलिये अति आवश्यक हो गया है कि उच्च स्तर पर भी मूल्यों पर आधारित शिक्षा व्यवस्था होना चाहिए।

समस्या कथन

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन (छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले जे संदर्भ में)

अध्ययन के उद्देश्य

1. छात्र – छात्राओं के मूल्यों का अध्ययन करना।
2. छात्र–छात्राओं के मूल्यों में निहित समानता का अध्ययन करना।
3. छात्र–छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन करना।
4. छात्र – छात्राओं के मूल्यों को बढाने हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

1. छात्र–छात्राओं में झूठ बोलने की प्रवृत्ति में सार्थक संबंध नहीं होगा।
2. छात्र–छात्राओं में चोरी करने संबंधी प्रवृत्ति का सार्थक संबंध नहीं होगा।
3. छात्र–छात्राओं में ईमानदारी संबंधी प्रवृत्ति में सार्थक संबध नहीं होगा।
4. छात्र–छात्राओं में धोखा देने संबंधी प्रवृत्ति में सार्थक संबंध नहीं होगा।

अध्ययन की परिसीमा

प्रस्तुत अध्ययन के लिए छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं तक सीमित है।

प्रतिदर्श

With e-ISSN 2394-8426 & International Impact Factor 8.249 ISSUE-IV(II), VOLUME-XI
DOI link - https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2412IV02V12P0017

प्रतिदर्श का चयन छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले के 4 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों को लिया गया जिसमें 50 छात्र और 50 छात्रायें अर्थात् कुल 100 छात्र–छात्राओं काचयन किया गया।

उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधानकर्ता में समस्या की प्रकृति के अनुसार छात्र–छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन के लिए डॉ. अल्पना सेन गुप्ता एवं प्रो. अरूण कुमार सिंह की नैतिक मूल्य मापनी का उपयोग किया।

सांख्कीय विधि

परीक्षण से प्राप्त प्राप्तांकों के आधार पर सार्थकता का मान ज्ञात करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन, सहसंबंध गुणांक का उपयोग किया गया।

प्रदत्तों की सारिणीयन विधि

प्रस्तुत अध्ययन से संबंधित प्रदत्तों को एकत्रित किया गया एवं सारिणीयन उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में छात्र–छात्राओं के नैतिक मूल्यों का परीक्षण मध्यमान, मानक विचलन एवं सहसंबंध गुणांक ज्ञात किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निष्कर्ष

सारिणी क्रमांक – 01

छात्र–छात्राओं के झूठ बोलने संबंधी नैतिक मूल्य का मापन

विद्यार्थी	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	सहसंबंध गुणांक
छात्र	50	6.64	1.38	0.07
छात्रायें	50	7.14	1.31	
df	98			

उपरोक्त सारिणी से ज्ञात होता है कि छात्रों के झूठ बोलने संबंधी प्रवृत्ति का मध्यमान 6.64 और मानक विचलन 1.38 है, जबकि छात्राओं में झूठ बोलने संबंधी मध्यमान 7.14 है और मानक विचलन 1.31 है इन दोनो समूहों के मध्य सार्थक संबंध देखने पर सहसंबंध गुणांक r का मूल्य 0.07 प्राप्त हुआ, जो 0.05 स्तर पर विश्वास का मूल्य 0.19 से कम है, जबकि df= 98 है।

अतः परिकल्पना विश्वास की पुष्टि करती है कि छात्र–छात्राओं में झूठ बोलने की प्रवृत्ति का सार्थक संबंध नहीं होगा। सह संबंध गुणांक का मूल्य 0.7 प्राप्त हुआ वह 0.00 से 0.20 तक के मध्य है अर्थात दोनों के मध्य नगण्य धनात्मक संबंध है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

सारिणी क्रमांक –02

छात्र–छात्राओं के चोरी करने संबंधी नैतिक मूल्य का मापन

विद्यार्थी	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	सहसंबंध गुणांक
छात्र	50	6.78	1.12	0.17
छात्रायें	50	6.98	1.00	
df	98			

उपरोक्त सारिणी से ज्ञात होता है कि छात्र–छात्राओं में चोरी करने संबंधी प्रवृत्ति मेंप्राप्त प्राप्तांकों से छात्रों का मध्यमान 6.78 एवं मानक विचलन 1.12 है, जबकि छात्राओं का मध्यमान 6.98 एवं मानक विचलन 1.00 है। दोनों के मध्य सार्थक संबंध देखने पर सहसंबंध गुणांक का मूल्य 0.17 प्राप्त हुआ, जो 0.05 पर विश्वास का मूल्य 0.19 से कम है. जबकि $df = 98$ है।

अतः परिकल्पना विश्वास की पुष्टि करती है कि छात्र–छात्राओं में धोखा देने संबंधी प्रवृत्ति का सार्थक संबंध नहीं होगा। सह संबंध गुणांक का मूल्य 0.15 प्राप्त हुआ वह 0.00 से 0.20 तक के मध्य है अर्थात दोनों के मध्य नगण्य धनात्मक संबंध है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

सारिणी क्रमांक –03

छात्र–छात्राओं में ईमानदारी प्रवृत्ति संबंधी नैतिक मूल्य का मापन

विद्यार्थी	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	सहसंबंध गुणांक
छात्र	50	7.30	1.40	0.09

With e-ISSN 2394-8426 & International Impact Factor 8.249 ISSUE-IV(II), VOLUME-XI
DOI link - https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2412IV02V12P0017

छात्रायें	50	7.72	1.06	
df	98			

उपरोक्त सारिणी से ज्ञात होता है कि छात्र–छात्राओं में ईमानदारी प्रवृत्ति संबंधी विश्लेषण में छात्रों का मध्यमान 7.30 एवं मानक विचलन 1.40 है जबकि छात्राओं का मध्यमान 7.72 एवं मानक विचलन 1.06 है। दोनों के मध्य सार्थक संबंध देखने पर सहसंबंध गुणांक r का मूल्य 0.09 प्राप्त हुआ जो 0.05 पर विश्वास का मूल्य 0.19 से कम है जबकि $df = 98$ है।

अतः परिकल्पना विश्वास की पुष्टि करती है, कि छात्र–छात्राओं में चोरी करने संबंधी प्रवृत्ति का सार्थक संबंध नहीं होगा। सहसंबंध गुणांकr का मूल्य 0.09 प्राप्त हुआ वह 0.00 से 0.20 तक के मध्य है, अर्थात दोनों के मध्य नगण्य धनात्मक संबंध है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

सारिणी क्रमांक–04

छात्र–छात्राओं में धोखा देने की प्रवृत्ति संबंधी नैतिक मूल्य का मापन

विद्यार्थी	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	सहसंबंध गुणांक
छात्र	50	6.78	1.57	
छात्रायें	50	7.46	1.12	– 0.15
df	98			

उपरोक्त सारिणी से ज्ञात होता है कि छात्र–छात्राओं में धोखा देने संबंधी प्रवृत्ति के प्राप्त प्राप्तांकों में छात्रों का मध्यमान 6.78 एवं मानक विचलन 1.57 है, जबकि छात्राओं का मध्यमान 7.46 एवं मानक विचलन 1.12 है। दोनों के मध्य सार्थक संबंध देखने पर सहसंबंध गुणांक r का मूल्य 0.15 प्राप्त हुआ जो 0.05 पर विश्वास का मूल्य 0.19 से कम है, जबकि $df = 98$ है।

अतः परिकल्पना विश्वास की पुष्टि करती है कि छात्र – छात्राओं में धोखा देने संबंधी प्रवृत्ति का सार्थक संबंध नहीं होगा। सहसंबंध गुणांकr का मूल्य 0.15 प्राप्त हुआ वह 0.00 से 0.20 तक के मध्य है, अर्थात दोनों के मध्य नगण्य धनात्मक संबंध है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

सुझाव

1. घर में माता–पिता द्वारा छात्र–छात्राओं को मानसिक रूप से तैयार करना चाहिए।
2. माता–पिता को अपने बच्चों के दैनिक कार्यक्रमों पर ध्यान रखकर उनकी प्रवृत्तियों को जानना चाहिए ।
3. विद्यालय में मूल्यों से संबंधी कार्यक्रम हों जैसे व्याख्यान और फिल्म प्रदर्शन का आयोजन करना चाहिए।
4. नैतिक मूल्यों की कमी वाले बालकों का सूक्ष्म एवं तार्किक निरीक्षण किया जाना चाहिए तभी उनमें मूल्यों का विकास किया जा सकता है।
5. विद्यार्थियों को श्रेष्ठ, नैतिक और धार्मिक सिद्धांतों को व्यक्त करने वाली कहानियां पढाई जानी चाहिए।
6. शिक्षा की प्रत्येक योजना में जीवन के नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को स्थानदिया जाये ।
7. छात्र–छात्राओं को महापुरूषों की जीवनियां पढ़ाई जानी चाहिए।
8. छुट्टियों और विद्यालय की पढ़ाई के बाद अतिरिक्त पाठ्यक्रम क्रियाओं के रूप में समाजसेवा दलों द्वारा छात्रों में समाजसेवा की भावना का विकास हो, ऐसे प्रयास करना चाहिये।
9. पाठ्यक्रम तथा शिक्षण प्रविधियों आदि को इस प्रकार आयोजित किया जाये जिसमें विद्यार्थियों में वांछित मूल्यों का विकास सहज ढंग से हो सके।
10. मूल्यों की शिक्षा के अंतर्गत–नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों . आदि की शिक्षा इतिहास, भूगोल, गणित, रसायन और भोतिक शास्त्र आदि विषयों की शिक्षा की भांति एक स्वतंत्र विषय के रूप में देना चाहिये।

संदर्भ ग्रंथ

1. शर्मा, श्रीमती आर.के. एवं दुबे श्रीकृष्ण – मूल्यों का शिक्षण, राधा प्रकाशन मंदिरआगरा 2 सन् 2007।
2. चौधरी उमराव सिंह, सामाजिक परिवर्तन और शिक्षा, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल सन् 2004।
3. त्रिपाठी डॉ नरेश चन्द्र–शिक्षा के नूतन आयाम, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा 2 सन् 2005–06।
4. डॉ. कपिल एच.के.–अनुसंधान तिथियां (व्यवहारपरक विज्ञानों में) हर प्रसाद भार्गव,आगरा सन् 1984।